International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1343-1345

श्याम सखा 'श्याम' की ग़जलों में सामाजिक चेतना

डॉ0 सुदेश कुमारी
सहायक प्रोफेसर–हिंदी (अंशकालिक), गौड़ ब्राह्मण महाविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

सारांश
'श्याम सखा 'श्याम' हिन्दी साहित्य जगत में महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उन्होंने काव्य संग्रह–औरत वेद पाँचमां (हरियाणावी दोहे) एक टुकड़ा दर्द, औरत को समझने के लिए, क्या फर्क पड़ता है (हिन्दी), दुनिया –भर के ग़म थे (गजल–संग्रह) कहानी संग्रह–अकथ, घणी गई थोड़ी रही (हिन्दी), इक सी बेला (पंजाबी) कोई फायदा नहीं (हिन्दी), समझणिए की मर (हरियाणवी), कहाँ–कहाँ तक (हिन्दी), लघुकथा–नाविक के तीर (हिन्दी) आदि विधाओं की रचना की। श्याम की गजलों में समाज की स्वार्थी भावना, रिश्वत खोरी भौतिकवाद का महत्व, आधुनिक समाज में तनाव, पश्चाताप का चित्रण, प्रभु इच्छा का चित्रण, बदलते रिश्तों का चित्रण, जाति–पाति का विरोध, बीती बात भूल जाने की प्रेरणा और माता–पिता के घटते सम्मान का चित्रण किया गया है।

मूल शब्द : करतूतें :– बूरेकर्म, कार्यशैली :– कार्य करने का ढंग, अश्क :– आँसू, साख :– प्रतिष्ठा, अवसाद :– पीड़ा।

प्रस्तावना
'श्याम' की ग़जलों में सामाजिक चेतना का पुट स्पष्ट दिखाई देता है। जो इस प्रकार है :–

समाज की स्वार्थी भावना का चित्रण इसमें कवि ने समाज की स्वार्थी भावना का चित्रण करते हुए कहा है–

अपने–अपने भीतर हैं सब, चिकने–चुपड़े बाहर हैं सब
किसकी प्यास बुझा पाएँगे, इक टूटी–सी गागर हैं सब
कौन समझ पाएगा इनको, बस प्याले में सागर हैं सब
छुप लें लाख नकाबों में वो, पर करतूतें उजागर हैं सब
ज़हर बाँटते फिरते सबको, बनते किन्तु सुधकर है सब[1]

'श्याम' जी कहना चाहते हैं कि सबके चेहरे दिखावटी हैं उनके अन्दर विश्वासघात भरा हुआ है। सब एक टूटे गागर की तरह हैं अर्थात् ये किसी की मदद नहीं कर सकते। इन्हें कोई नहीं समझ सकता ये अल्प ज्ञान को ही पूर्ण ज्ञान मान बैठे हैं। 'श्याम' जी कहते हैं कि लाख नकाबों में भी कपटी चेहरे को नहीं छुपाया जा सकता। आज व्यक्ति अमृत का लोभ दिखाकर विष बांटते फिर रहे हैं। आज लोगों की कथनी–करनी में जमीन–आसमान का अन्तर है।

रिश्वतखोरी और अकर्मण्यता का चित्रण
'श्याम' जी ने अपनी ग़जलों में समाज में फैली रिश्वतखोरी का भी मार्मिक अंकन किया है। ग़जल देखिए–

अब तक जितने घर देखे, सबमें बैठे डर देखे
घूस मिली हर कुर्सी पर, जितने भी दफ्तर देखे[2]

इसमें कवि ने बताया है कि आज कार्यालयों में रिश्वत का बोल–बाला है। बिना उत्कोच के कोई कार्य नहीं हो रहा। 'जीना था या मरना था' नामक ग़जल में लोगों को अकर्मण्यता का चित्रण भी किया है। उदाहरण देखिए–

जीना था या मरना था, आखिर कुछ तो करना था
भीतर दफ्तर था खाली, बाहर बैठा धरना था।
दर्द न था जब कोइ भी, क्यों अश्कों का झरना था
पछताना मत 'श्याम' कभी, उनको कहाँ सुधरना था।[3]

पर–पीड़ा के प्रति समाज की उदासीनता
आज मनुष्यों की भीड़ तो देखने को मिल जाती है लेकिन कोई किसी के गम नही बंटवाता। जिन घरों में शोक होता है वहाँ भी मातम नही होता। सब दूसरे के दुःख को देखकर जख्म ही देते हैं मरहम का काम नहीं करते। उदाहरण 'जिन्दगी थी, गम न था' ग़जल देखिए–

जिन्दगी थी, ग़म न था, हादसा यह कम न था
आसमाँ नज़दीक था, पर, परों में दम न था
उन घरों में सोग था, पर वहाँ मातम न था
देखकर सब चल दिए, जख्म थे, मरहम न था[4]

भौतिकवाद का महत्त्व
कवि के मतानुसार आज आपसी प्रेम समाप्त हो गया है। व्यक्ति भौतिकवादी हो गया है। माया को ही व्यक्ति का सत्कार समझा जाता है। धन–दौलत जाने पर व्यक्ति की प्रतिष्ठा, मान–सम्मान एवं सत्कार की भावना समाप्त हो जाती है। 'जब आपस का प्यार गया' ग़जल में भौतिकवादी भावना का चित्रण देखिए–

जब आपस का प्यार गया, जीने का आधार गया
मुँह क्या मोड़ा माया ने, साख गई, सत्कार गया।[5]

आधुनिक समाज में तनाव

इनमें कवि ने बताया है कि वर्तमान समाज तनाव की जिन्दगी जी रहा है। आज व्यक्ति की केवल श्वास चल रही है, उसका मन विचलित है। शरीर मात्रा कहने का है मन कहीं भटक रहा है। उदाहरण देखिए–

साँसे हैं धड़कन है
ग़ायब तो बस मन है
कहने को तन है वहाँ
और कहीं पर मन है
मिलने–जुलने को अब
किस घर में आंगन हैं[6]

पश्चाताप का चित्रण

इसमें कवि ने बताया है कि समय निकलने के बाद पश्चाताप ही हाथ लगता है। आज व्यक्ति दूसरे की मौत के बाद ही उसके महत्त्व को समझते हैं। आज उसके साथ वाद–विवाद करते हैं लेकिन समय निकलने के बाद उसके महत्त्व को समझते हैं। 'कल वो मुझको याद करेगा' ग़जल का उदाहरण देखिए–

कल वो मुझको याद करेगा
व्यर्थ आँसू बरबाद करेगा
क्ल सब – कुछ स्वीकारेगा वो
लेकिन आज फ़साद करेगा
लगता था उसका मैं भी कुछ
याद मौत के बाद करेगा।[7]

अपनों द्वारा दिये गये ग़म का चित्रण

कवि कहता है कि अपने ही ग़म देत हैं। इसमें कवि ने बताया है कि परमात्मा ही हमें बचाता है अपने ही हमें कष्ट देते हैं। 'वो अपनो को मारा है' ग़जल का उदाहरण देखिए–

वो अपनों का मारा है, सचमुच ही बेचारा है
जितनी बार गिरा हूँ मैं, 'उसने' मुझे उबारा है
ग़म का विष है आँसू में, इसलिए तो खारा है
बिन बोले बहता जा तू, तेज समय की धारा है।[8]

प्रभु इच्छा का चित्रण

कवि कहता है कि सब परमात्मा की इच्छा पर निर्भर है। उनकी आज्ञा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है 'होने को तो सब होगा' और 'जो होना है वह होता है' आदि ग़जलों में इसके सुन्दर उदाहरण देखिए–

होने को तो सब होगा
लेकिन जाने कब होगा
चाहेगा जब रब यारा
मिलना अपना तब होगा[9]

जो होना है वह होता है
फिर क्यों नाहक तू रोता है
कूछ भी मिलता नहीं यहाँ तो
चैन जिगर का क्यों खोता है
देख–देखकर खेल जगत् के
हँसता कभी वो कभी रोता है[10]

बदलते आचरण और टूटते रिश्तों का मार्मिक चित्रण

कवि ने बताया है कि आज समाज का आचरण बदल रहा है तथा आपसी रिश्ते नाते टूट रहे हैं। कोई किसी पर विश्वास नहीं करता। ग़जल 'जीने का सामान नहीं' में इसके उदाहरण देखिए–

माता–पिता की कुरबानी का
इस पीढ़ी को ध्यान नहीं है
भरी तिजोरी पर दिल खाली
यारों ! वो धनवान् नहीं है
जो न बदल पाये खुद को ही
कहलाता वो ज्ञान नही है।[11]

इसमें कवि ने दिखाया है कि समय बलवान है। समय की मार सबसे भयंकर होती है। कोई भी समय की मार से नहीं बच सकता। ग़जल 'मत पूछो तुम हाल बिरादर' में उदाहरण देखिए–

मत पूछो तुम हाल बिरादर
जीवन है जंजाल बिरादर
अपने ही हो जायँ पराए
वक्त चले जब चाल बिरादर
मौज मना लो आज अभी बस
कल ले जाए काल बिरादर।[12]

बदलते रिश्तों का चित्रण

'श्याम' की ग़जलों के अनुसार रिश्ते बदल रहे हैं। आज अपने ही अपनों के साथ छल कर रहे है। ग़जल 'रिश्ते बदल गये' में उदाहरण देखिए–

रिश्ते बदल गए, सिक्कों में ढ़ल गए
दुश्मन तो दूर थे, अपने ही छल गए
जो थे खरे रहे, खोटे थे चल गए
काम क्या आ पड़ा, वे सभी टल गए
जाने कहाँ फिसल, खुशियों के पल गए
बदला तू 'श्याम' कुछ, कुछ हम बदल गए[13]

जाति–पाति का विरोध

'श्याम' जी ने अपनी ग़जलों में कबीर की तरह जाति–पाति का विरोध किया है। उन्होंने 'कैसे बीती रात न पूछो' ग़जल में जाति–पाति के स्थान पर ज्ञान को महत्त्व दिया है। उदाहरण देखिए–

कैसे बीती रात न पूछो
बिगड़े क्यों हालत न पूछा
दिल की दिल में ही रहने दो
दिल से दिल की बात न पूछो
ज्ञान ध्यान की सुन लो बातें
जोगी की तुम जात न पूछो[14]

शहरी जीवन की चकाचौंध के प्रति उदासीनता

कवि ने अपनी ग़जलों में शहरी जीवन की चकाचौध के प्रति उदासीनता का भाव प्रकट किया है। उन्होंने कहा है कि शहर का जीवन पानी पर कुछ लिखने के समान कष्टकारी है। 'कहना मुश्किल कितना है' ग़जल में उदाहरण देखिए–

कहना मुश्किल कितना है
पानी पर ज्यों लिखना हे
शहरों में रहना अब तो
सचमुच ही दुर्घटना है
जुल्म सहन कर यूं जीना
नीलामी है बिकना है[15]

बीती बात भूल जाने की प्रेरणा

कवि ने अपनी ग़जलों में यह भी सन्देश दिया है कि व्यक्ति को बीती बात को भूल जाना चाहिए तथा व्यक्ति को जमाने के साथ ही चलना चाहिए तथा आपसी वाद–विवाद से बचना चाहिए। व्यक्ति को अपने आँसू व्यर्थ नहीं बहाने चाहिए। ग़जल 'बातें बीती याद न कर' में कवि ने इसका सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। देखिए–

बातें बीती याद न कर, आँसू यूँ बरबाद न कर
साथ ज़माने के ही चल, खुद को तू अपवाद न कर
जो कुछ कहना है कह दे, नाहक वाद–विवाद न कर
आना–जाना साथ लगा, अब ज्यादा अवसाद न कर
दुनिया पागल समझेगी, यूँ खुद से संवाद न कर[16]

समाज में चिट्ठियों का महत्त्व

कवि ने समाज में चिट्ठियों या पत्रों के महत्त्व को भी चित्रित किया है। आज समाज में भले ही चिट्ठियों का महत्त्व कम माना जाता है लेकिन पुरातन समय में चिट्ठियाँ भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती थी। चिट्ठियाँ दिल के राज़ को खोलने का कार्य करती हैं। 'राज दिल के रही खोलती चिट्ठियाँ' ग़जल में उदाहरण देखिए–

राज़ दिल के रही खोलती चिट्ठियाँ, मौन में भी रही बोलती चिट्ठियाँ
तल्ख्याँ जिन्दगी में बढ़ी जब कभी, शहद उसमें रही घोलती चिट्ठियाँ।
दौरे–तन्होई जब भी हुआ कुछ घना, गिर्द मेरे रही डोलती चिट्ठियाँ
वक्त के उस महाजन की मुट्ठी में है, ये वफ़ा और जफ़ा तोलती चिट्ठियाँ
'श्याम' लगत हो जब भी हमें भूलने, बक्स यादों के हैं खोलती चिट्ठियाँ[17]

माता–पिता के घटते सम्मान का चित्रण

'श्याम' ने अपने ग़जल 'जीना दुश्वार बहुत' में माता–पिता के प्रति बच्चों का घटता सम्मान का हृदय स्पर्शी चित्रण किया है। आज बेटा–बेटी स्वार्थ से ही माता–पिता की सेवा करते हैं। आज माता–पिता लाचार हैं। उदाहरण देखिए–

जीना है दुश्वार बहुत, दिल के हैं बटमान बहुत
तन्हाई उसकी किस्मत, है जिसका व्यापार बहुत
जब बेटों का दौर चला, बाप हुआ लाचार बहुत
प्यार–मुहब्बत आदर–मान, जीने के आधार बहुत
फ़िक्र किसे माँ–बाप की है, अपना ही परिवार बहुत
तेरे दिल में स्थान नहीं, यूँ फैला संसार बहुत[18]

संदर्भ सूची

1. 'अपने–अपने भीतर हैं सब' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 28
2. 'अब तक जितने घर देखे' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 40
3. 'जीना था या मरना था' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 31
4. 'जिन्दगी थी ग़म न था' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 34
5. 'जब आपस का प्यार गया' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 43
6. 'साँसे हैं धड़कन' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 44–45
7. 'इश्क तुझे करना है क्या' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 47
8. 'वो अपनो का मारा है' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 50
9. 'होने को तो सब होगा' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 54
10. 'जो होना है वा होता है' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 80
11. 'जीने का सामान नहीं है' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 57
12. 'मत पूछा तुम हाल बिरादर' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 64
13. 'रिश्ते बदल गए' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 65
14. 'कैसे बीती रात न पूछो' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 73
15. 'कहना मुश्किल कितना है' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 84
16. 'बातें बीती याद न कर' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 85
17. 'राज दिल के रही खोलती चिट्ठियाँ' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 86
18. 'जीना है दुश्वार बहुत' (दुनिया भर के ग़म थे) – श्याम सखा 'श्याम' पृ0 90–91